an>

Title: Need to release unutilised funds allocated for conservation of heritage buildings and monuments in Jharkhand based on the recommendation of 13th Finance Commission and develop Itkhori and Kauleshwari in the State as tourist places.

श्री सुनील कुमार सिंह (चतरा) : मेरे संसदीय क्षेत्र चतरा (झारखण्ड) में भदुली, कोल्हुआ, पहाड़ी, कुण्ड, गुफा, तमासिन, द्वारी झरना, लातेहार का लोध जल प्रपात, नगर भवानी प्राचीन मन्दिर, चंदवा नगर मन्दिर, लातेहार, श्रीकेदाल मन्दिर व झारखण्डी मन्दिर, पलामू, ईटखोरी और कौलेश्वरी हिल्स, लातोंग वाइल्डलाइफ सेंक्चुरी, बेतला नेशनल पार्क, पालामऊ टाइगर रिजर्व, सिंहभूमि एलीफेंट रिजर्व एवं महुआदनर वोल्फ सेंक्चुरी स्थित है। पर्यावरण आधारित पर्यटन का विकास करना एवं राजा मेदनी राय द्वारा निर्मित पलामू एवं नावागढ़ किला आदि का विकास करने की आवश्यकता है। नेतरहाट को पर्वतीय पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की आवश्यकता है। इससे क्षेत्र में पर्यटकों का आवागमन बढ़ेगा। पर्यटकों को आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ उक्त स्थानों के ऐतिहासिक-पुरातात्विक धरोहरों के समुचित रखरखाव की योजना को कार्यरूप देना आवश्यक है।

भारत सरकार के 13वें वित्त आयोग ने वर्ष 2011-15 की अवधि के लिए राज्य विशिष्ट आवश्यकताओं हेतु 21 राज्यों के लिए विरासत संरक्षण (Heritage Conservation) एवं संस्कृति में स्मारक और पुरातात्विक अवशेषों के संरक्षण और विकास करने तथा स्थानीय लोगों के लाभार्थ हेरिटेज गैलरियों के निर्माण हेतु 1454 करोड़ रुपए की कुल सहायता अनुदान की सिफारिश की गई थी। इस मद में झारखण्ड राज्य के लिए 100 करोड़ रुपए अनुदान की अनुशंसा की गई थी। राज्य सरकार की एक उच्च स्तरीय समिति उक्त योजना के कार्यान्वयन हेतु दिनांक 06.02.2012 को आयोजित हुई जिनमें 26 योजनाओं का कार्यान्वयन 87.90 करोड़ रूपये की लागत से करने की स्वीकृति प्रदान की गई। इनमें आर्कियोलॉजीकल साइट्स ऑफ ईटखोरी, चतरा के लिए 2.20 करोड़ तथा कोलेश्वरी हिल्स, हंटरगंज, चतरा के लिए 1.65 करोड़ रूपए स्वीकृत किये गये, परन्तु झारखण्ड राज्य की पूर्ववर्ती सरकारों की पर्यटन के प्रति अपेक्षित रूचि के अभाव के कारण भारत सरकार द्वारा आवंटित पैसे के खर्च करने की समय सीमा 31 मार्च, 2015 को समाप्त हो गई है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि 13वें वित्त आयोग की अनुशंसित राशि में शेष राशि को पुनः उपयोग के लिए जारी किया जाए जिससे झारखण्ड के पर्यटन स्थलों, ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व के स्थलों को विकसित किया जा सके तथा झारखण्ड के चतरा जिलान्तर्गत "ईटखोरी" एवं "कौलेश्वरी" सुप्रसिद्ध पौराणिक ऐतिहासिक धारोहर है। पुरातात्विक महत्व का यह स्थल शैव, शाक्त, जैन, हिन्दू एवं बुद्ध मतावलंबियों को समाहित करना, धार्मिक विविधता, सह-अस्तित्व एवं सहिष्णुता के साथ-साथ सांस्कृतिक एकता का दिग्दर्शन भी करता है। इसमें संस्कृति, वारिस, आध्यात्मिकता और इको पर्यटन का विवेकपूर्ण मिश्रण है। अतः ईटखोरी और कौलेश्वरी को देश के प्रमुख पर्यटन परिपथों में सम्मिलित कर विकसित किया जाए।